६. सागर और मेघ

– राय कृष्णदास

मौखिक

समुद्र से प्राप्त होने वाली संपदाओं के नाम एवं उनके व्यावहारिक उपयोगों की जानकारी बताइए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारत की तीनों दिशाओं में फैले हुए समुद्रों के नाम पूछें । ● समुद्र से प्राप्त होने वाली संपत्तियों के नाम तथा उपयोग बताने के लिए कहें । ● इन संपत्तियों पर आधारित उद्‌योगों के नामों की सूची बनवाएँ ।

सागर – मेरे हृदय में मोती भरे हैं ।

मेघ – हाँ, वे ही मोती जिनके कारण हैं–मेरी बूँदें ।

सागर – हाँ, हाँ, वही वारि जो मुझसे हरण किया जाता है । चोरी का गर्व !

मेघ – हाँ, हाँ वही जिसको मुझसे पाकर बरसात की उमड़ी नदियाँ तुम्हें भरती हैं ।

सागर – बहुत ठीक । क्या आठ महीने नदियाँ मुझे कर नहीं देंगी ?

मेघ – **(मुसकराया)** अच्छी याद दिलाई । मेरा बहुत–सा दान वे पृथ्वी के पास धरोहर रख छोड़ती हैं, उसी से कर देने की निरंतरता कायम रहती है ।

सागर – वाष्पमय शरीर ! क्या बढ़–बढ़कर बातें करता है अंत को तुझे नीचे गिरकर मिट्‌टी में मिलना पड़ेगा ।

मेघ – खार की खान ! संसार भर के दुष्ट ! पृथ्वी के विकार तुझे मैं शुद्‌ध और मिष्ट बनाकर उच्चतम स्थान देता हूँ । फिर तुझे अमृतवारि धारा से तृप्त और शीतल करता हूँ । उसी का यह फल है ।

सागर – हाँ, हाँ, दूसरे की करतूत पर गर्व । सूर्य का यश अपने पल्ले ।

मेघ – **(अट्‌टहास करता है)** क्यों मैं चार महीने सूर्य को विश्राम जो देता हूँ । वह उसी के विनियम में यह करता है । उसका यह कर्म मेरी संपत्ति है । वह तो बदले में केवल विश्राम का भागी है ।

सागर – और मैं जो उसे रोज विश्राम देता हूँ ।

मेघ – उसके बदले तो वह तेरा जल शोषण करता है ।

सागर – चाहे कुछ भी हो जाए, मैं निज व्रत नहीं छोड़ता । मैं सदैव अपना कर्म करता हूँ और अन्यों से करवाता भी हूँ ।

मेघ – **(इठलाकर)** धन्य रे व्रती, मानो श्रद्‌धापूर्वक तू सूर्य को वह दान देता है । क्या तेरा जल वह हठात नहीं हरता ?

सागर – **(गंभीरता से)** और वाड़व जो मुझे नित्य जलाया करता है, तो भी मैं उसे छाती से लगाए रहता हूँ । तनिक उसपर तो ध्यान दो ।

मेघ – **(मुसकरा दिया)** हाँ, उसमें तेरा और कुछ नहीं, शुद्‌ध स्वार्थ है । क्योंकि वह तुझे जो जलाता न रहे तो तेरी मर्यादा न रह जाए ।

सागर – **(गरजकर)** तो उसमें मेरी क्या हानि ! हाँ, प्रलय अवश्य हो जाए ।

परिचय

जन्म : १३ नवंबर १८८२ वाराणसी (उ.प्र.) । **मृत्यु :** १९८५

परिचय: राय कृष्णदास हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषा के जानकार थे । आपने कविता, निबंध गद्‌यगीत, कहानी, कला, इतिहास आदि विषयों पर रचना की है ।

प्रमुख कृतियाँ : भारत की चित्रकला, भारत की मूर्तिकला (मौलिक ग्रंथ), साधना आनाख्या, सुधांशु (कहानी संग्रह) प्रवाल (गद्‌यगीत) आदि ।

गद्‌य संबंधी

संवाद : दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच वार्तालाप, बातचीत या संभाषण संवाद कहलाता है ।

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखक ने सागर एवं मेघ के गुणों को दर्शाया है । अपने गुणों पर इतराना, अहंकार करना एक बुराई है–यह स्पष्ट करते हुए सभी को विनम्र रहने की शिक्षा प्रदान की है ।

मेघ – **(एक साँस लेकर)** आह ! यह हिंसा वृत्ति और क्या; मर्यादा नाश क्या कोई साधारण बात है ?

सागर – हो, हुआ करे । मेरा आयास तो बढ़ जाएगा ।

मेघ – आह ! उच्छृंखलता की इतनी बड़ाई ?

सागर – अपनी ओर तो देख, जो बादल होकर आकाश भर में इधर से उधर मारा-मारा फिरता है ।

मेघ – धन्य तुम्हारा ज्ञान ! मैं यदि सारे आकाश में घूम फिर के संसार का निरीक्षण न करूँ और जहाँ आवश्यकता हो जीवन-दान न करूँ तो रसा नीरस हो जाए, उर्वरा से वंध्या हो जाए । तू नीचे रहने वाला ऊपर रहने वालों के इस तत्त्व को क्या जाने ।

सागर – यदि तू मेरे लिए ऊपर है तो मैं तेरे लिए ऊपर हूँ क्योंकि हम दोनों का आकाश एक ही है ।

मेघ – हाँ ! निस्संदेह ऐसी दलील वे ही लोग कर सकते हैं जिनके हृदय में कंकड़-पत्थर और शंख-घोंघे भरे हैं ।

सागर – बलिहारी तुम्हारी बुद्धि की, जो रत्नों को कंकड़ पत्थर और मोतियों को सीप-घोंघे समझते हो ।

मेघ – तुम्हारे भीतर रत्न बचे कहाँ हैं ? तुम तो, कंकड़-पत्थर को ही रत्न समझे बैठे हो ।

सागर – और मनुष्य जो इन्हें निकालने के लिए नित्य इतना श्रम करते हैं तथा प्राण खोते हैं ?

मेघ – वे स्पर्धा करने में मरे जाते हैं ।

सागर – अरे, अपनी सीमा में रमने की मौज को अस्थिरता समझने वाले मूर्ख ! तू ढेर-सा हल्ला ही करना जानता है कि-

मेघ – हाँ मैं गरजता हूँ तो बरसता भी हूँ । तू तो...

सागर – यह भी क्यों नहीं कहता कि वज्र भी निपातित करता हूँ ।

मेघ – हाँ, आततायियों को समुचित दंड देने के लिए ।

सागर – कि स्वतंत्रों का पक्ष छेदन करके उन्हें अचल बनाने के लिए ।

मेघ – हाँ, तू संसार को दीन करने वाली उच्छृंखलताओं का पक्ष क्यों न लेगा; तू तो उन्हें छिपाता है न !

सागर – मैं दीनों की शरण अवश्य हूँ !

मेघ – सच है अपराधियों के संगी ! यही दीनों की सहायता है कि संसार के उत्पातियों और अपराधियों को जगह देना और संसार को सदैव भ्रम में डाले रहना ।

सागर – दंड उतना ही होना चाहिए कि दंडित चेत जाए, उसे त्रास हो जाए । अगर वह अपाहिज हो गया तो-

मेघ – हाँ, यह भी कोई नीति है कि आततायी नित्य अपना सिर

मौलिक सृजन

'परिवर्तन सृष्टि का नियम है' इस संदर्भ में अपना मत व्यक्त कीजिए ।

पठनीय

प्राकृतिक परिवेश के अनुसार मानव के रहन-सहन संबंधी जानकारी पढ़कर चर्चा कीजिए ।

श्रवणीय

निम्न मुद्‌दों के आधार पर जागतिक तापमान वृद्‌धि संबंधी अपने विचार सुनाइए :-

कारण समस्याएँ उपाय

उठाना चाहे और शास्ता उसी की चिंता में नित्य शस्त्र लिए खड़ा रहे, अपने राज्य की कोई उन्नति न करने पावे ।

सागर – भाई अपने क्रोध को शांत करो । क्रोध में बात बिगड़ती है क्योंकि क्रोध हमें विवेकहीन बना देता है ।

मेघ – **(थोड़ा शांत होते हुए)** हाँ, यह बात तो सच है । हम दोनों ने अपने-अपने क्रोध को शांत कर लेना चाहिए ।

सागर – तो आओ हम मिलकर जनकल्याण के विषय में थोड़ा विचार विमर्श कर लें ।

मेघ – हाँ ! मनुष्य हम दोनों पर बहुत निर्भर हैं । प्रतिवर्ष किसान बड़ी आतुरता से मेरी प्रतीक्षा करते हैं ।

सागर – मेरे क्षार से मनुष्य को नमक प्राप्त होता है जिससे उसका भोजन स्वादिष्ट बनता है ।

मेघ – सागर भाई हमें कभी आपस में उलझना नहीं चाहिए ।

सागर – आओ प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अब कभी घमंड में एक दूसरे को अपमानित नहीं करेंगे बल्कि मिलकर जनकल्याण के लिए कार्य करेंगे ।

मेघ – मैं नदियों को भर-भर तुम तक भेजूँगा ।

सागर – मैं सहर्ष उन्हें उपकार सहित ग्रहण करूँगा ।

लेखनीय

'अगर न नभ में बादल होते' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।

आसपास

दूरदर्शन पर प्रतिदिन दिखाए जाने वाली तापमान संबंधी जानकारी देखिए । संपूर्ण सप्ताह में तापमान में किस तरह का बदलाव पाया गया, इसकी तुलना करके टिप्पणी तैयार कीजिए ।

शब्द संसार

वारि (पुं.सं.) = जल
वाड़व (पुं.सं.) = समुद्र जल के अंदर वाली अग्नि
मर्यादा (स्त्री.सं.) = सीमा
रसा (स्त्री.सं.) = पृथ्वी
निपात (पुं.सं.) = गिरना
आततायी (पु.) = अत्याचारी
समुचित (वि.) = उचित, उपयुक्त
उच्छृंखल (वि.) = उद्दंड, उत्पाती
आतुरता (भा.सं.) = उत्सुकता
आयास (पुं.सं.) = प्रयत्न, परिश्रम

पाठ से आगे

मोती कैसा तैयार होता है इसपर चर्चा कीजिए और दैनिक जीवन में मोती का उपयोग कहाँ कहाँ होता हैं ।

पाठ के आँगन में

(१) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :-

(अ)	(आ)
दूसरे की करतूत पर गर्व करने वाला	मनुष्य
सागर को नित्य जलाने वाला	सागर
झूठी स्पर्धा करने में मरने वाला	वाड़व
	मेघ

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :-

मेघ इनके भेद जानते हैं

(३) स्वमत लिखिए :-

अगर सागर न होता तो ....

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में से सर्वनाम एवं क्रिया छाँटकर भेदों सहित लिखिए :-

सर्वनाम

चाहे कुछ भी हो जाए, मैं निज व्रत नहीं छोड़ता। मैं सदैव अपना कर्म करता हूँ और अन्यों से करवाता भी हूँ ।

क्रिया

(२) निम्न वाक्य से संज्ञा तथा विशेषण पहचानकर भेदों सहित लिखिए :-

संज्ञा

मोहन ने फलों की टोकरी में कुछ रसीले आम, थोड़े से बेर तथा कुछ अंगूर के गुच्छे साफ पानी से धोकर रखवा दिए।

विशेषण

रचना बोध

....

....

....